गाँधी युग में अस्पृश्यता की समस्या

डॉ0 अवध किशोर प्रसाद

विद्यानन्द राम

अछूतोद्धार या अस्पृश्यता के सम्बन्ध में आमतौर पर महात्मा गाँधी के दृष्टिकोण बदलते रहें हैं। अत : 1930 तक महात्मा गाँधी का विचारधारा कुछ दूसरी प्रतीत होती हैं एंव गोलमेज सम्मेलन, साम्प्रदायिक पंचाट तथा पूना पैक्ट के बाद उनके विचारधारा में अधिक क्रियाशीलता पायी जाती है। सन् 1895 में ही कांग्रेस अपने कार्य कारण से पूर्णतया राजनीतिक दल बन गयी और अब उसकी सामाजिक बुराईयों को मिटाने अथवा कम करने के प्रति कोई रूचि और कोई चिन्ता नहीं थी।

अस्पृश्यता की समस्या का उपरोक्त ऐतिहासिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विवेचना के बाद प्रथम अध्याय में महात्मा गाँधी को प्रभावित करने वाली घटनाओं को अध्ययन करेंगे। महात्मा ने अपन आत्मा का शीर्षक ''सत्य के मेरे प्रयोग'' {Experiment With Truth} दिया हैं।